शिष्यता के अनिवार्य तत्व

मसीही जीवन के लिए अनिवार्य तत्व
अध्ययन कुँजी

यीशु कौन है?

अध्याय 5 : यीशु के मित्र व शिष्य

परिचय

यह अध्याय शिष्यता के अनिवार्य तत्व मॉड्यूल के शीर्षक *यीशु कौन है?* का भाग है। सात अध्यायों की यह श्रृंखला मसीही दृष्टिकोण से यीशु के व्यक्तित्व व कार्यों का उल्लेख करती है, जिसमें उसकी पहचान, कार्य, शिक्षाएं और मृत्यु शामिल हैं। यीशु मसीह का मसीही विश्वास और धर्म का केन्द्र होने के कारण, शिष्यों का यीशु के बारे में जानना तथा उसके बारे में प्रचार करने वालों को यह जानना बहुत महत्वपूर्ण है कि कौन सी बातें यीशु को सबसे अनोखा, योग्य और भक्ति व अनुसरण करने योग्य बनाती है।

अध्ययन कुंजी को प्रति व्यक्ति के लिए इस मकसद से तैयार किया गया है, ताकि वे स्वयं विशेष शिक्षा का गहनता से अध्ययन कर सकें। www.dehindi.org पर प्राप्त वीडियो और ऑडियो को शिष्यता के अनिवार्य तत्व नामक शिक्षा सामग्री के साथ इस्तेमाल किया जा सकता है।

बाइबल के हवालों को पवित्र बाइबल, बाइबल सोसाइटी ऑफ इण्डिया (बी.एस.आई.) से लिया गया है। इन हवालों को प्रकाशित करने की अनुमति ली गयी है। इसके सारे अधिकार आरक्षित हैं।

अन्य सभी सामग्री © 2019 ट्रांस वर्ल्ड रेडियो कनाडा है, और इसका उपयोग किसी भी तरह से किया जा सकता है, जब तक आप इसका उपयोग मसीह के लिए दुनिया तक पहुंचने के उद्देश्य से करते हैं और सामग्री के उपयोग के लिए शुल्क नहीं लेते हैं। अधिक लाइसेंस विवरण देखें: www.discipleshipessentials.org/licensing

यीशु कौन है?

अध्याय 5 : यीशु के मित्र व शिष्य

यह किस बारे में है?

इस अध्याय में हम देखते हैं कि इस धरती पर जीवन व्यतीत करते समय यीशु द्वारा बनाए गए रिश्तों से हम क्या सीख सकते हैं।

ताकि आप जान पाएं...

यीशु इस धरती को छोड़ते समय, अपने पीछे ऐसे साधारण लोगों के समूह को छोड़ गए, जिन्होंने मानवीय रूप में असाधारण परमेश्वर को देखा था। अपनी शक्ति से वे ऐसे आन्दोलन की शुरूआत नहीं कर सकते थे, जो जगत के छोर तक फैलने तक बढ़ता रहता – लेकिन पवित्र आत्मा की सहायता से वे अद्‌भुत कामों को कर सके। यीशु ने अपना समय लोगों को शिक्षा देने में व्यतीत किया। प्रारम्भिक कलीसिया साधारण मनुष्यों, पुरूषों, स्त्रियों, पापियों, बच्चों और समाज के तुच्छ लोगों से मिल कर बनी थी। इससे यह साबित होता है कि हमें परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिये धन या शक्ति की नहीं, बल्कि विश्वास की आवश्यकता होती है। वह हमें सिखाता है कि हमें स्वयं को दूसरों से बढ़ कर नहीं समझना चाहिये और उद्धार सब के लिये उपलब्ध है। यीशु ने स्त्रियों और बच्चों को पुरूषों के समान ही अहमियत दी। हमारी कलीसिया को आज यीशु के उदाहरण का अनुसरण करना चाहिये।

प्रारम्भ

1. यीशु ने व्यक्तिगत् तौर पर लोगों को "अनुसरण करने" तथा उसका चेला होने के लिये क्यों आमंत्रित किया? यीशु शिक्षा देते तथा चमत्कार करते समय अपने आस पास लोगों को क्यों चाहते थे?

2. यदि आप यीशु के चेलों के स्थान पर होते और वह आप से अपनी नौकरी, अपना घर छोड कर उसके पीछे होने के लिये कहते, तो आप के लिये क्या छोड़ना सबसे अधिक मुश्किल होता?

अध्ययन

❖ **यीशु : रिश्तों के द्वारा परिवर्तन :** जब यीशु अपने राज्य में आया, तो उस ने अपने काम की शुरूआत सैन्य बल, राजनैतिक रैलियों, या किसी परम्परागत् तरीके का उपयोग करते हुए नहीं की। बल्कि उसने असिद्ध व कमज़ोर लोगों के साथ सम्बन्ध बनाया और उनके जीवन को परिवर्तित किया, जैसा कि वह आज भी कर रहा है।

➢ यीशु अपने राज्य को बनाने तथा सुसमाचार फैलाने के लिये समाज के धनी, शक्तिशाली या उच्च श्रेणी के लोगों का उपयोग नहीं किया। इसके बजाए उसने विश्वास करने वाले व मन से अनुसरण करने वाले तुच्छ लोगों को इस्तेमाल किया।

➢ जिन साधारण लोगों को परमेश्वर ने इस्तेमाल किया, वे परमेश्वर द्वारा किये गए छोटे छोटे कामों के लिये भी परमेश्वर को महिमा देते थे। अगर वे काम धनी लोगों या शक्तिशाली लोगों के साथ किये जाते, तो उनके लिये सारा श्रेय स्वयं को देना काफी हद तक स्वाभाविक था। जबकि, सारा काम परमेश्वर के द्वारा किया जाता था (प्रेरितों के काम 4:13)।

❖ **साधारण लोगों ने यीशु से प्रेम किया :** यीशु की शिक्षाओं को सुनने के लिये आने वाले लोग जीवन के अलग–अलग क्षेत्रों से आए साधारण लोग थे। यीशु ने समाज द्वारा ठुकराए गए लोगों का विशेष तौर पर स्वागत् किया।

➢ **यीशु ने ग़रीबों को सुसमाचार सुनाते हुए भविष्यद्वाणी को पूरा किया :** यीशु मसीह ग़रीबों के पास आए और उन्हें उद्धार, अनन्त जीवन; और स्वर्ग के खजाने का सुसमाचार सुनाया। लोग आर्थिक, सामाजिक, और आत्मिक तरीकों से ग़रीब हो सकते हैं। निम्नलिखित वचनों को पढ़ें और लिखें कि यीशु ने ग़रीबों के बारे में क्या कहा :

मरकुस 12:41–44	
लूका 6:20	
लूका 5:12–14	

➢ **यीशु ने बच्चों का स्वागत् किया :** यीशु ने बच्चों को तुच्छ नहीं जाना, बल्कि उसने उनका स्वागत् किया तथा उनके महत्व को बताया। यीशु के समय में सांस्कृतिक दृष्टिकोण से यह बहुत अलग रहा होगा। निम्नलिखित वचनों को पढ़ कर बताएं कि किस प्रकार यीशु ने बच्चों को प्रतिउत्तर दिया :

मत्ती 11:25–26	
मत्ती 18:1–4	
लूका 18:15–17	

- बच्चों ने यीशु की बात को समझा और विश्वास के साथ स्वीकार किया। वे यीशु के साथ रहना पसन्द करते थे। बच्चे अपनी भावनाओं को लेकर ईमानदार होते हैं और ऐसा प्रतीत होता है कि वे उसके साथ रह कर आनन्दित थे।
- यीशु ने सिखाया कि हमें बालकों के समान बनना चाहिये।
- बच्चों ने यीशु की आराधना की, जबकि बुद्धिमान अगुवों ने (जो अपनी दृष्टि में बुद्धिमान बनते थे) उसकी हँसी उड़ाई (मत्ती 21:15–16)।

➢ **यीशु, पापियों का मित्र :** यीशु पर चुँगी लेने वालों और पापियों का मित्र होने का दोष लगा था। हालांकि यीशु ने कभी उनके पापों को स्वीकार नहीं किया, लेकिन उसने पापियों के साथ भोजन किया, उनके साथ बातें कीं तथा उनके साथ कोमल व्यवहार किया। जिसकी वजह से उस समय के धार्मिक लोग यीशु से क्रोधित थे। यीशु ने लोगों पर दोष लगाने या उन्हें दण्ड देने की बजाए, उन्हें प्रेम किया, उन से दोस्ती की तथा उन्हें मन फिराव व विश्वास करने के लिये आमंत्रित किया।

➢ व्याभिचार में पकड़ी गई स्त्री के साथ यीशु ने किस प्रकार का व्यवहार किया? (यूहन्ना 8:1–11 पढ़ें)

➢ यीशु ने चुंगी लेने वाले जक्कई (जिसने लोगों से उचित कर से अधिक कर वसूला) के खोजने पर कैसी प्रतिक्रिया दी? इस बातचीत का क्या परिणाम हुआ? (लूका 19:1–10 पढ़ें)

❖ **साधारण लोगों ने यीशु का अनुसरण किया :** यीशु के समय में, चेलों या अनुयायियों के लिये किसी महान् उपदेशक के साथ नगर नगर जाना आम बात थी। ये चेले जहाँ कहीं जाते, उसी स्थान पर शिक्षक की सहायता करने के लिये काम धन्धा करना शुरू कर देते थे। उन्होंने स्वयं दूसरों को शिक्षा देने के द्वारा यीशु का सहायता की। चेले हमें दिखाते हैं कि परमेश्वर अपने राज्य के महान् कामों को करने के लिये उस पर विश्वास करने वाले साधारण लोगों को इस्तेमाल करते हैं।

➢ **शिष्यों का बुलाया जाना :** यीशु ने अपना अनुसरण करने के लिये बारह विशेष लोगों को चुनाव किया। बाइबल हमें इन चेलों के बुलाए जाने के बारे में बताती है (मत्ती 10:1–4; मत्ती 9:9; यूहन्ना 1:43–46)। लूका 5:1–11 में शमौन पतरस के बारे में पढ़ें – वह यीशु का अनुसरण करने के लिये किस प्रकार बुलाया गया? उसका उत्तर क्या था?

➢ **शिष्यों को प्रशिक्षित करके भेजना :** यीशु ने बारह शिष्यों को प्रशिक्षित करने और शिक्षा देने पर ध्यान केन्द्रित किया (हालांकि दूसरे चेले व स्त्रियां, अधिकतर उसके साथ ही रहा करते थे)। यीशु ने उन्हें दूसरों को उद्धार का सुसमाचार सुनाने के लिये प्रशिक्षित व तैयार किया।

- यीशु ने चेलों को अपना सन्देश सिखाया, ताकि वे दूसरों को भी बता सकें।
- यीशु ने अपने चेलों को अपने पास रखा, ताकि वे देख कर विश्वास करें।
- जैसा यीशु ने सिखाया था, चेलों ने वैसा ही किया।

➢ चेलों को सिखाने के बाद, यीशु ने उन्हें दूसरों को सिखाने के लिये भेजा। यीशु ने उन्हें किस प्रकार भेजा? लूका 10:1–9 का पढ़ें और सीखी बातों को लिखें।

➢ **साधारण लोग :** यद्यपि चेले अपना पूरा समय यीशु के साथ व्यतीत किया करते थे, फिर भी चेले सन्घर्ष करने वाले साधारण लोग थे। वे सिद्ध अनुयायी नहीं थे; लेकिन उन्होंने अपने पापों को तथा उनकी दैनिक आवश्यकताओं को पूरा करने की यीशु की योग्यता को पहचाना। यीशु के चेलों से सम्बन्धित निम्नलिखित उल्लेख को पढ़ें। उन्होंने कैसा बर्ताव किया?

मत्ती 28:16–18	
यूहन्ना 18:15–18, 25–27	
मत्ती 26:36–45	

यद्यपि यीशु ने उन्हें पहले ही बता दिया था कि वह मर कर पुनः जीवित होगा, फिर भी बहुत से चेलों ने उसकी पुनरूत्थान हुई देह को देख कर सन्देह किया। चेले डरे और उन्हें सन्देह था, यहां तक कि शमौन पतरस ने तो उसे पहचानने से भी इन्कार कर दिया।

➢ यह हमें इस्तेमाल करने की परमेश्वर की योग्यता के बारे में क्या बताती है? क्या हमें यीशु का शिष्य होने के लिये पहले सिद्ध होने की आवश्यकता है?

❖ **परमेश्वर असाधारण कामों को करने के लिये साधारण लोगों को इस्तेमाल करते हैं :** इस जगत में रहते हुए यीशु ने लोगों के साथ बेहद प्रेम किया। वह लोगों पर प्रभुता करने वालों और लोगों का फायदा उठाने वालों के साथ कठोर

था, परन्तु जो लोग अपने पापों को स्वीकार कर के पश्चाताप करने को तैयार थे, उन पर वह अपनी भलाई प्रगट करता था। यीशु ने इन साधारण शिष्यों को सिखाया – जो कभी स्कूल नहीं गए थे, ताकि – वे दूसरों को परमेश्वर के राज्य के बारे में बता सकें।

- **यीशु ने उन्हें चेला बनाने की आज्ञा दी :** यीशु ने सिखाया कि परमेश्वर के राज्य में लोग एक एक कर के बढ़ेंगे, और उसने सिखाया कि चेले दूसरों को शिक्षा देकर चेला बनाएं (मत्ती 28:19)। इन लोगों की वजह से, यीशु का सन्देश नये और विश्वासयोग्य चेलो की सहायता से जगत के कोने कोने तक पहुंच गया है!

- **चेलों ने मृत्यु तक यीशु का अनुसरण किया :** अपरिपक्व होने के बावजूद, यीशु के चेलों ने मरते दम तक यीशु की शिक्षाओं को नहीं छोड़ा। सुसमाचार की खातिर, उन्होंने यीशु की तरह मौत को अपने लिये सौभाग्य समझा, और उन्होंने मृत्यु को भी बड़े साहस के साथ गले लगा लिया।

- **यीशु ने उन्हें सामर्थ्य दी :** चेलों को चमत्कार करने का आदेश दिया गया था और उन्होंने यीशु के नाम में बड़े बड़े आश्चर्यकर्म कर के साबित कर दिया कि उसका सन्देश सत्य था (प्रेरितों के काम 1:8)।

- **यीशु ने उनकी संख्या को बढ़ाया :** अधिक से अधिक लोग यीशु का अनुसरण करते हुए इस आत्मिक आन्दोलन से जुड़ गए (प्रेरितों के काम 2:46–47; प्रेरितों के काम 6:7)।

- **यीशु आप से प्रेम करता है :** यीशु ने कभी नहीं चाहा कि लोग उससे डरें, बल्कि उस ने प्रेम और साधना को प्रोत्साहित किया। यीशु ने उन्हें हर हाल में स्वीकार करते हुए प्रेम किया। ये साधारण लोग, उन में पाई जाने वाली परमेश्वर की शक्ति पर निर्भर कर के, बड़े बड़े काम कर सके। हम में से प्रत्येक जन यीशु का मित्र व चेला बन सकता है, और संसार के प्रत्येक व्यक्ति तक क्षमा के सन्देश को पहुंचाने में उसके अभियान का एक हिस्सा बन सकता है। यीशु हम से प्रेम करता है, और जहां कहीं हम हैं, वह चाहता है कि हम उसके काम में जुट जाएं। आप यीशु के पीछे होने के आमंत्रण का किस प्रकार उत्तर देंगे?

सारांश

- यीशु ने अपने राज्य को स्थापित करने के लिये सैन्य बल, राजनैतिक रैलियों या किसी परम्परागत् तरीके का इस्तेमाल नहीं किया। उसने असिद्ध व कमज़ोर लोगों के साथ सम्बन्ध बनाया और उनके जीवन का परिवर्तित किया।

- जितने लोग यीशु के पीछे हो लिये, वे सभी प्रकार के साधारण लोग थे।

- यीशु मसीह ग़रीबों के पास आए और उन्हें उद्धार, अनन्त जीवन; और स्वर्ग के खजाने का सुसमाचार सुनाया।

- यीशु ने छोटे बच्चों को तुच्छ नहीं जाना, बल्कि उनका स्वागत कर के उनके महत्व को बताया।

- यीशु पर चुँगी लेने वालों और पापियों का मित्र होने का दोष लगा था। हाँलाकि यीशु ने कभी उनके पापों को स्वीकार नहीं किया, लेकिन उसने पापियों के साथ भोजन किया, उनके साथ बातें कीं, और उनके साथ कोमल व्यवहार किया।

- यीशु ने अपने चेलों से कहा, "मेरे पीछे आओ", और उसने अपेक्षा की कि वे अपना साधारण जीवन छोड़ कर उसके साथ उसके कामों के भाग बन जाएं।

- यीशु ने अपने चेलों को जाकर सुसमाचार सुनाने तथा उसके राज्य की खुशखबरी सुनाने के लिये प्रशिक्षित किया।

- यीशु ने साधारण लोगों को असाधारण काम करने के लिये चुना – यीशु हमें भी इस्तेमाल कर सकता है!

चिन्तन करने योग्य प्रश्न

1. मसीहीयत, यीशु मसीह का शिष्य बनने का आत्मिक आन्दोलन है। मसीहीयत, किस तरह सारे जगत में फैली? आपके क्षेत्र में यह कहां पाई जा सकती है और यह कैसे फैल रही है?

2. यीशु का प्रेम के साथ लोगों की अगुवाई करने का तरीका, वर्तमानकाल के अन्य अगुवों से किस प्रकार भिन्न है (विशेषकर के, सैन्य व राजनैतिक अगुवों से)?

3. क्या आप जानते हैं कि यीशु आपकी साधारण अवस्था होने के बावजूद आप से प्रेम करता है? आप यीशु द्वारा "आकर उसके पीछे हो लेने" के आमंत्रण का क्या करेंगे?